

प्यारे बापदादा की 108 श्रीमत्

1. पवित्र बनो, योगी बनो।
2. देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल एक बाप को ही याद करना है।
3. ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं का पालन करना है।
4. कभी भी संगदोष में नहीं आना है।
5. सदा श्रेष्ठ संग, ईश्वरीय संग में रहना है।
6. सब को सुख ही देना है।
7. किसी को भी मन्सा, वाचा, कर्मणा दुःख नहीं देना है।
8. सदा शान्तचित्त, हर्षितचित्त, गंभीर और एकान्तप्रिय बनकर रहना है।
9. सबको बाप का परिचय देना है, सुख, शान्ति का रास्ता बताना है।
10. किसी भी देहधारी से दिल नहीं लगाना है।
11. सभी को आत्मिक दृष्टि से देखने का अभ्यास करना है।
12. अपनी चलन देवताओं जैसी बड़ी रॉयल रखनी है।
13. कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है।
14. कभी भी रूठना नहीं है।
15. कभी भी मूड ऑफ नहीं करना है।
16. सदा रूहानी खुशी में रहना है।
17. सबको सुखदायी वरदानी बोल से उमंग-उत्साह में लाकर आगे बढ़ाना है।
18. सदा ईश्वरीय याद में रह रूहानी नशे में रहना है।
19. विश्वकल्याण की सेवा में तत्पर रहना है।
20. अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन कर विश्व सेवा के नए नए प्लान बनाने हैं।
21. अमृतवेले उठ बाप को बड़े प्यार से, दिल से याद करना है।
22. किसी भी आत्मा पर क्रोध नहीं करना है।
23. बहुत-बहुत मीठा बन सबको मीठा बनाने की सेवा करनी है।
24. कभी भी विकारों में नहीं जाना है।
25. आत्माभिमानी बन बाप को याद करना है।
26. कोई भी विकर्म नहीं करना है।
27. दैवीगुण धारण करने हैं।
28. आसुरी अवगुणों को निकाल देना है।
29. स्वदर्शनचक्र फिराते रहना है।
30. आपस में ज्ञान की ही लेन देन करनी है।
31. आपस में कभी भी लून पानी नहीं होना है।
32. माया से कभी भी हार नहीं खानी है।
33. इस मायावी संसार के आकर्षण में नहीं जाना है।
34. लोभवृत्ति नहीं रखनी है।
35. चोरी नहीं करनी है।

36. झूठ नहीं बोलना है।
37. बाप से कुछ भी छिपाना नहीं है।
38. बाप के भण्डारे से जो भी मिले उसमें ही सदा सन्तुष्ट रहना है।
39. सचखण्ड की स्थापना के कार्य में बाप का पूरा-पूरा मददगार बनना है।
40. संगठन को मजबूत बनाने के लिए सदा एकमत होकर रहना है।
41. सदा ज्ञान का सिमरन करते रहना है।
42. व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद नहीं करना है।
43. सभी की विशेषताओं को ही देखना है।
44. किसी से भी पैसे की लेन-देन कर अब हिसाब-किताब नहीं बनाना है।
45. एक दो के स्नेही सहयोगी बनकर रहना है।
46. न्यारा प्यारा कमल पुष्प समान बनकर रहना है।
47. बीमारी में भी सदा खुश रहना है।
48. किसी की भी निन्दा अथवा परचिन्तन नहीं करना है।
49. सबको शान्तिधाम, सुखधाम की राह दिखानी है।
50. निन्दा-स्तुति, मान-अपमान में एकरस स्थिति रखनी है।
51. कभी भी झरमुई-झंगमुई नहीं होना है।
52. ट्रस्टी होकर रहना है।
53. सिवाए एक बाप के किसी से भी मोह नहीं रखना है।
54. योगयुक्त अवस्था में रहकर ही हर कर्म करना है।
55. ज्ञान की टिकलू-टिकलू, भूं-भूं और शंखध्वनि करते रहना है।
56. भोजन की एक-एक गिटटी बाप की याद में रहकर बाप के साथ खानी है।
57. किसी की भी विशेषताओं के ऊपर प्रभावित नहीं होना है।
58. सदैव सात्विक भोजन ही स्वीकार करना है।
59. भोजन पर एक दो को बाप और वर्से की ही याद दिलानी है।
60. कोई भी उल्टी चलन नहीं चलनी है।
61. सर्विस में कभी भी बहाना नहीं देना है।
62. बड़ों को रिगार्ड और छोटों को स्नेह देना है।
63. संगम पर अपना तन-मन-धन सबकुछ सफल करना है।
64. चलते-फिरते, उठते-बैठते भी बाप की याद में रहकर दूसरों को भी बाप की याद दिलानी है।
65. सदा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ स्वमान में रहना है।
66. ट्राफिक कन्ट्रोल का उल्लंघन नहीं करना है।
67. रात्रि सोने से पूर्व भी बाप को अपना सच्चा पोतामेल देना है।
68. ज्यादा से ज्यादा अशरीरी बनने की प्रैक्टिस करनी है।
69. सर्व सम्बन्ध एक बाप से ही रखने हैं।
70. सर्विस में अपनी हड्डियां स्वाहा करनी हैं।
71. कभी भी ईश्वरीय कुल का नाम बदनाम नहीं करना है।
72. खाने-पीने की चीजों में भी अनासक्त वृत्ति रखनी है।
73. अपने स्वीटहोम, शान्तिधाम को याद करना है।

74. ज्यादा हंसी मजाक में नहीं आना है।
75. जरूरत से ज्यादा चीजें संग्रह नहीं करनी हैं।
76. विनाश के पहले पहले अपना सबकुछ सफल कर लेना है।
77. अपनी विशेषताओं पर कभी भी अंकार नहीं करना है।
78. देह-अभिमान वश कोई भी विकर्म नहीं करना है।
79. किसी भी बात में संशय बुद्धि नहीं बनना है।
80. याद की फांसी पर लटके रहना है।
81. ब्रह्मा बाप समान बनने का पुरुषार्थ करना है।
82. पढ़ाई में रेग्युलर, पंच्युअल बनना है।
83. न बुरा देखना, न बुरा बोलना, न करना, न सोचना और न ही बुरा सुनना है।
84. सबको मुक्ति, जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है।
85. सेवा में विघ्न रूप नहीं बनना है।
86. कोई भी नया कर्मबन्धन नहीं बनाना है।
87. सम्बन्ध सम्पर्क में आते सदा रुहानियत में रहना है।
88. अशरीरी बनने का अभ्यास करते ही रहना है।
89. पतितों को पावन बनाने की सेवा करनी है।
90. वायुमण्डल में शान्ति, शक्ति, खुशी, उमंग-उत्साह के वायब्रेशन फैलाने की सेवा करनी है।
91. मम्मा बाबा को फालो करना है।
92. सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना है।
93. इस पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी बनना है।
94. साक्षी अवस्था में रह अपनी स्थिति को मजबूत बनाना है।
95. सच्ची दिल से बाप पर पूरा-पूरा बलिहार जाना है।
96. दैवी मैनेर्स धारण करने और कराने हैं।
97. किसी के भी नाम, रूप में नहीं फंसना है।
98. कांटों को फूल बनाने की सेवा करनी है।
99. और सब संग तोड़ एक बाप के संग में रहना है।
100. योगबल से अपने पुराने सब हिसाब-किताब चुक्तु करने हैं।
101. अपना स्वभाव सरल बनाकर सबसे मिलनसार होकर रहना है।
102. योग-ज्वाला से अपने पुराने अवगुणी स्वभाव-संस्कारों को जड़ से निकाल भस्म कर देना है।
103. सर्व आत्माओं को सुख देकर दुआओं का पात्र बन, अविनाशी खाता जमा करना है।
104. अपना बोल, चाल बहुत-बहुत मीठा रखना है सबको उमंग-उत्साह में लाने वाले बोल बोलने हैं।
105. सदैव बाबा को अपना साथी बनाकर रखना है।
106. बाप समान बन सबको शीतलता के छींटे डालकर शीतल बनाना है।
107. पवित्रता के बल पर श्रीमत द्वारा विश्व को पावन बनाने की निरन्तर सेवा करते रहना है।
- 108. बाबा को इतना प्यार से, दिल से याद करना है जो आंखों से प्रेम के आंसू आ जायें।**

ईश्वरीय मत पर चलने से फायदे अथवा प्राप्तियां

मनुष्य से देवता बन जाते हैं।	मलेच्छबुद्धि से स्वच्छबुद्धि बन जाते हैं।
तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हैं।	आसुरीबुद्धि से दैवीबुद्धि बन जाते हैं।
पतित से पावन बन जाते हैं।	लूनपानी से खीरखण्ड बन जाते हैं।
पापात्मा से पुण्यात्मा बन जाते हैं।	नास्तिक से आस्तिक बन जाते हैं।
नर से श्री नारायण बन जाते हैं।	बाह्यमुखी से अन्तर्मुखी बन जाते हैं।
नारी से श्री लक्ष्मी बन जाते हैं।	भिखारी से अधिकारी बन जाते हैं।
पेनी से पाउण्ड बन जाते हैं।	बेसमझ से समझदार बन जाते हैं।
कौड़ी से हीरा बन जाते हैं।	शुद्र सो ब्राह्मण सो देवता बन जाते हैं।
भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बन जाते हैं।	भक्त अथवा अज्ञानी से ज्ञानी बन जाते हैं।
कांटों से फूल बन जाते हैं।	भोगी से राजयोगी बन जाते हैं।
रोगी से निरोगी बन जाते हैं।	निर्बल से बलवान बन जाते हैं।
दुःखी से सुखी बन जाते हैं।	बेगर से प्रिन्स बन जाते हैं।
अशान्त से शान्त बन जाते हैं।	कनिष्ठ सो उत्तम सो पुरुषोत्तम बन जाते हैं।
सांवरे से गोरा बन जाते हैं।	निराशावादी से आशावादी बन जाते हैं।
शाम से सुन्दर बन जाते हैं।	हठयोगी से सहजयोगी बन जाते हैं।
रंक से राजा बन जाते हैं।	शक्तिहीन से शक्तिशाली बन जाते हैं।
गरीब से अमीर बन जाते हैं।	कड़वे से मीठा बन जाते हैं।
नर्कवासी से स्वर्गवासी बन जाते हैं।	कब्रिस्तानी से परिस्तानी बन जाते हैं।
निर्गुण से सर्वगुण संपन्न बन जाते हैं।	विपरीतबुद्धि से प्रीतबुद्धि बन जाते हैं।
जीवनबन्ध से जीवनमुक्त बन जाते हैं।	गृहस्थी से ट्रस्टी बन जाते हैं।
विकारी से निर्विकारी बन जाते हैं।	अनराईटिस से राईटियस बन जाते हैं।
अंहकारी से निरंहकारी बन जाते हैं।	इनसालवेन्ट से सालवेन्ट बन जाते हैं।
अभिमानी से देहीअभिमानी बन जाते हैं।	संशयबुद्धि से निश्चयबुद्धि बन जाते हैं।
छी:-छी: से गुलगुल बन जाते हैं।	असन्तुष्ट से सन्तुष्टमणि बन जाते हैं।
पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बन जाते हैं।	रावण सम्प्रदाय से राम सम्प्रदाय के बन जाते हैं।
तुच्छबुद्धि से विशालबुद्धि बन जाते हैं।	